F. I., I, 922–23.

२११. तुलसी

परिचय

गण—श्वासहर (च०), सुरसादि, शिरोविरेचन (सु०)।

कुल—तुलसी-कुल (लैबिएटी-Labiatae)।

नाम—लै०-ऑसिमम सैंक्टम (Ocimum sanctum Linn.); सं०-तुलसी (तुलनारहित), सुरसा (रस उपयोगी होने अथवा देवताओं पर चढ़ने से); अपेतराक्षसी, भूतघ्नी (जन्तुघ्न होने के कारण), बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि (दुन्दुभि के समान लम्बी मञ्जरी होने से), सुलभा, ग्राम्या (घर-घर में लगाये जाने से); बं०-म०-गु०-ता०-ते०-तुलसी; कन्न०-श्रीतुलसी; मल०-मित्तवु; अं०-सैक्रेड बेसिल (Sacred Basil), होली बेसिल (Holy Basil)।

स्वरूप—इसका शाखाप्रशाखायुक्त, रोमश, वर्षायु क्षुप २-४ फीट ऊँचा होता है। सारा क्षुप बैंगनी रंग का दिखता है। **पत्र**-१-२½ इञ्च लंबे, **अण्डाकार**-आयताकार, लट्वाकार, अखण्ड या दन्तुर, तीक्ष्णाग्र या गोलाग्र, दोनों पृष्ठों पर

रोमश, अधःपृष्ठ पर सिराओं के बीच में ग्रन्थियुक्त होते हैं। बैंगनी रङ्ग के छोटे पुष्प ६–८ इञ्च लम्बी मञ्जरियों में सघन चक्रों में आते हैं। पुष्पवृन्त बाह्यकोष के बराबर होता है। बाह्यकोष-छोटा, भीतर की ओर चिकना, बाहर से ग्रन्थिल होते हैं। इसके निचले दो दाँत बहुत लम्बे शूक से युक्त तथा ऊपरी आयताकार दाँत से लम्बे होते हैं। पार्श्विक दाँत लट्वाकार, निचले दाँतों से छोटे होते हैं। अन्तः-कोष बहुत छोटा प्रायः बाह्यकोष के बराबर होता है। पुंकेशरसूत्र बाहर निकले होते हैं। **बीज**-अंडाकार या गोलाकार, कुछ चपटे, प्रायः चिकने, भूरे या रक्ताभ, छोटे काले धब्बों से युक्त होते हैं। पुष्प और फल-शीत ऋतु में आते हैं।

जाति—सुश्रुतसंहिता में सुरसा और श्वेत सुरसा ये दो शब्द मिलते हैं. फणिज्झक भी इसीका भेद प्रतीत होता है। भावप्रकाश-निघण्टु में शुक्ल और कृष्ण दो भेद किये गये हैं। O. canum Sims. जिसके पुष्प प्रायः श्वेत होते हैं श्वेत-सुरसा हो सकती है। O. gratissimum Linn. फणिज्झक हो सकता है। इसे रामतुलसी भी कहते हैं।

उत्पत्तिस्थान—यह भारत में सर्वत्र मिलती है। हिमालय में ६ हजार फीट की ऊँचाई तक होता है।

रासायनिक संघटन—इसकी पत्तियों तथा पुष्पमंजरी से एक लवंगगन्धि उड़नशील तैल (०.१–०.२३%) प्राप्त होता है। इसमें फैनोल ४५–७६% तथा अल्डीहाइड १५–२५% होता है। बीजों से एक स्थिर तैल १७.८% निकलता है। इनके अतिरिक्त पौधे में क्षाराभ, ग्लाइकोसाइड और टैनिन होते हैं। पत्तियों में ऐस्कार्बिक एसिड और कैरोटिन होते हैं।

गुण

गुण—लघु, रूक्ष	रस—कटु, तिक्त
विपाक—कटु	वीर्य—उष्ण
प्रभाव—कृमिघ्न	

कर्म

दोषकर्म—यह उष्ण होने के कारण कफवातशामक है।

संस्थानिक कर्म-बाह्य—यह जन्तुघ्न, वेदनाहर, शोथहर, त्वग्दोषहर तथा शिरोविरेचन है।

आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान—यह वेदनाहर तथा आक्षेपशामक है।

पाचनसंस्थान—यह दीपन, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न है।

रक्तवहसंस्थान—हृद्य है। रक्तशोधक भी है।

श्वसनसंस्थान—यह कासहर, श्वासहर तथा क्षयनाशक है। इसके उड़नशील

तैल में क्षयनाशक (Anti-tubercular) शक्ति स्ट्रेप्टोमाइसिन की अपेक्षा दशमांश तथा आइसोनियेजिड में चतुर्थांश है।

मूत्रवहसंस्थान—इसके बीज मूत्रल हैं।

प्रजननसंस्थान—बीज शुक्रल हैं।

त्वचा—यह त्वग्दोषहर है।

तापक्रम—यह ज्वरघ्न तथा शीतप्रशमन है।

सात्मीकरण—विषघ्न है। बीज बल्य है।

प्रयोग

दोषप्रयोग—यह वातश्लैष्मिक विकारों के लिए प्रशस्त है।

संस्थानिक प्रयोग-बाह्य—कच्छू, दद्रु आदि में इसकी पत्तियाँ पीस कर लगाते हैं। इसके पत्र का स्वरस का शिरोरोग में नस्य के रूप में प्रयुक्त होता है। कर्णशूल में भी पत्रस्वरस डालते हैं। यह मच्छड़ आदि कीड़ों का भी नाश करती हैं। कहते हैं, जहाँ तुलसी के पौधे होते हैं वहीं से मच्छरों का सफाया हो जाता है।

आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान—यह अनेक वेदना तथा आक्षेपयुक्त विकारों में प्रयुक्त होती है।

पाचनसंस्थान—अग्निमांद्य, विष्टम्भ तथा कृमिरोग के लिए उपयोगी है।

रक्तवहसंस्थान—हृदयदौर्बल्य तथा रक्तविकारों में लाभकर है।

श्वसनसंस्थान—कास, श्वास, पार्श्वशूल तथा यक्ष्मा के लिए अतीव प्रशस्त है। इन रोगों में पत्रस्वरस का प्रयोग करते हैं।

मूत्रवहसंस्थान—मूत्रकृच्छ्र में इसके बीजों का लुआब पिलाते हैं।

प्रजननसंस्थान—शुक्रमेह में बीजों का प्रयोग लाभकर है।

त्वचा—त्वचागत विकारों में प्रयुक्त होता है।

तापक्रम—वातश्लैष्मिक ज्वर, प्रतिश्याय आदि में तुलसी प्रसिद्ध औषध है। मरिच के साथ तुलसी पत्ती चबा जाते हैं या पत्रस्वरस पीते हैं। विषमज्वर या शीतप्रधान ज्वर में विशेष रूप से लाभकर है।

सात्मीकरण—विभिन्न विषों के निवारण के लिए इसका प्रयोग होता है। बीजों का प्रयोग दौर्बल्य में करते हैं।

प्रयोज्य अंग—पत्र, पुष्प, बीज, मूल

मात्रा—चूर्ण-१-३ ग्रा०, स्वरस ५-१० मि० लि०।

अथ तुलसी शुक्ला कृष्णा च । तयोर्नामगुणानाह

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमञ्जरी । अपेतराक्षसी गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ॥ ६२ ॥
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् । दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्त्तिता ॥ ६३ ॥

तुलसी के संस्कृत नाम—तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, अपेतराक्षसी, गौरी, भूतघ्नी, देवदुन्दुभि ये सब हैं । तुलसी—कटु तथा तिक्तरस युक्त, हृदय को हितकर, उष्ण, दाह तथा पित्त कारक, अग्निदीपक एवम् कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसली की पीड़ा, कफ और वायु को दूर करने वाली है। सफेद तथा काली तुलसी दोनों ही गुणों में समान मानी जाती हैं ॥ ६२-६३ ॥

३४ तुलसी

हि०–तुलसी । **बं०**–तुलसी । **गु०**–तुलसी । **ते०**–गग्गेर चेट्टु । **म०**–तुळस । **ता०**-तुलशी । **क०**–एरेड तुलसी । **अं०**–Holy Basil (होली बेसील) । **ले०**–*Ocimum sanctum Linn.* (ओसीमम् सेंक्टम्) । Fam. Labiatae (लेबिटएटी) ।

यह प्रायः सब गरम और साधारण प्रान्तों के बन उपवनों में आप ही उत्पन्न होती है और पवित्र मानी जाने से घर में भी लगाते हैं ।

यह क्षुप जाति की वनस्पति १ से २॥ फीट तक ऊंची होती है और समस्त क्षुप से तीव्र गन्ध आती है । शाखायें सीधी और फैली हुई रहती हैं । पत्ते–१ से २ इञ्च तक लम्बे और अण्डाकार तथा सुगंधित होते हैं । शाखाओं के अन्त में मञ्जरी लगती है । जिसके पत्ते हरे सफेदी लिये होते हैं उसको सफेद तुलसी और जिसके पत्ते और डंडियां कालापन युक्त हरे होते हैं उसको काली तुलसी कहते हैं । तुलसी की अन्य भी कई जातियां (Species) पाई जाती है जिनमें से ऑ० ग्रेटिस्सिमम् (O. gratissimum Linn.) को **रामतुलसी** कहते हैं ।

कृष्णतुलसी अधिक गुणकारी समझी जाती है । इसके पत्ते एवं बीजादि का उपयोग किया जाता है ।

रासायनिक संगठन—इसके पत्तों में ०·७% उड़नशील तैल पाया जाता है जो कफनिःसारक, प्रतिदूषक तथा कीड़ों को भगाता है ।

गुण और प्रयोग—तुलसी के पत्र या उसका स्वरस उष्ण, रूक्ष, कफनिःसारक, शीतहर, वातहर, स्वेद जनन, दीपन, कृमिघ्न, दुर्गन्धनाशक एवं प्रतिदूषक है ।

इसका उपयोग कास, श्वास, पार्श्वशूल, विषमज्वर, बालयकृत वृद्धि, विषविकार, एवं पाचन के विकारों में करते हैं । इसका विशेष प्रयोग इन व्याधियों में अन्य औषधि के अनुपान के रूप में किया जाता है ।

इसके बीज मधुर, स्निग्ध, शीत एवं मूत्र जनन होते हैं जिनका उपयोग मूत्रकृच्छ्रादि विकारों में किया जाता है।

पत्तों के स्वरस का बाह्य उपयोग कर्णशूल, व्रण प्रक्षालन, कृमि-कीट-दंश एवं चर्मरोगों में किया जाता है।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला; बीज १ से २ माशा।